दोस्ती का महत्व

जेन एडम्स की कहानी

जॉनसन

दोस्ती का महत्व

जेन एडम्स की कहानी

यह कहानी है जेन एडम्स की, यानि एक ऐसी महिला की, जिसने बहुत से दोस्त बनाये। यह कहानी उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। जेन एडम्स के बारे में अन्य ऐतिहासिक तथ्य अंतिम पृष्ठ पर दिए गए हैं।

बहुत समय पहले की बात है, जेन एडम्स नाम की एक छोटी लड़की थी, जो इलिनॉय राज्य के सीडरविल शहर में एक बड़े और खूबसूरत घर में रहती थी।

जेन एक दुबली-पतली लड़की थी, और उसकी कमर थोड़ी टेढ़ी थी। इसलिए वह अपना सर थोड़ा सा एक ओर झुका कर रखती थी। जब भी वह दर्पण में अपने को देखती, एक ठंडी साँस भर कर रह जाती।

"काश, मैं इतनी साधारण न होती," वह अपने आप से कहती।

जेन जब छोटी ही थी, उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। उसकी बड़ी बहनों ने ही उसे पाला पोसा था। और उसके भाई ने भी। लेकिन उसके भाई-बहनों को ऐसा नहीं लगता था की जेन देखने में साधारण है। हाँ, वे यह ज़रूर सोचते थे कि वह कुछ ज़्यादा ही दुबली है।

"चलो, जेन," एक सुबह उन्होंने उसे बहलाते हुए कहा, "अपना नाश्ता खाओ। तुम वैसे ही इतनी दुबली हो, नहीं खाओगी तो और भी कमज़ोर हो जाओगी।"

"जल्दी से नाश्ता खाओ, जेन," उसके पिता ने कहा। "मैं कुछ काम से फ्रीपोर्ट जा रहा हूँ, और अगर तुम अपना दलिया जल्दी से ख़तम कर लो, तो तुम भी मेरे साथ चल सकती हो।"

आकर्षक व्यक्तित्व वाले अपने पिता से जेन बहुत स्नेह करती थी, और उनके साथ घूमने जाना उसे बहुत अच्छा लगता था। जल्दी से उसने अपना सारा दलिया ख़तम कर लिया, और सारा दूध भी पी लिया। फिर मिस्टर एडम्स ने अपनी घोड़ागाड़ी में घोड़े जोते, और दोनों फ्रीपोर्ट के लिए निकल पड़े, जो कि सीडरविल के निकट ही एक छोटा नगर था।

जेन के पिता एक संपन्न व्यापारी थे। उनके कई कारखाने थे, वह बैंक भी चलाते थे, और अपने राज्य के विधायक भी थे। उन्हें अक्सर अपने काम-काज के सिलसिले में सीडरविल के नज़दीक अन्य शहरों में जाना पड़ता था। जेन उनके साथ अनेकों बार फ्रीपोर्ट जा चुकी थी।

सामान्यतः मिस्टर एडम्स शहर की मुख्य सड़क से होकर जाया करते थे। लेकिन आज सुबह वह बेकार सी दिखने वाली एक छोटी सड़क पर मुड़ गए।

"इस रास्ते से तो हम पहले कभी नहीं गए," जेन ने कहा। वह गली के दोनों ओर बसे बदहाल घरों को देख रही थी। घरों के सामने की ज़मीन पर खर-पतवार उगे हुए थे, और उनकी खिड़कियों में फटे-पुराने परदे लटके हुए थे। सड़क पर खेलते, फटे-पुराने कपडे पहने छोटे बच्चे उनकी घोड़ागाड़ी से बचने के लिए दौड़ कर सड़क के किनारे हो जाते।

"पिताजी, बात क्या है?" जेन फुसफुसाकर बोली। "यहाँ सबकुछ इतना बदसूरत क्यों है?"

"ये लोग बहुत ग़रीब हैं," मिस्टर एडम्स ने कहा। "वे अच्छे घर और नए कपडे नहीं खरीद सकते।"

जेन एक क्षण सोचती रही, और फिर मुस्कुराई। "जब मैं बड़ी हो जाउंगी," उसने कहा, "एक बहुत बड़ा और खूबसूरत घर बनाउंगी, ठीक वैसा ही जिसमे हम रहते हैं। मैं वह घर ठीक यहीं बनाउंगी, इन बदसूरत मकानों के नज़दीक। फिर ये बच्चे हमारे आँगन में आकर खेल पाएंगे, और मैं उन सबसे दोस्ती करूँगी।"

उस दिन घर लौट कर जेन अपने शांत कमरे में चली गई, जहाँ उसकी प्यारी गुड़िया भी थी। गुड़िया अपनी कांच की आँखों से जेन की ओर देख रही थी।

"ज़रा सोचो तो, मार्जोरी," जेन ने गुड़िया से कहा। "फ्रीपोर्ट में बहुत से ऐसे बच्चे हैं, जिनकी परवाह करने वाला कोई नहीं है। वे छोटे-छोटे गंदे घरों में रहते हैं, और चीथड़े पहनते हैं।"

जैसे ही उसने यह कहा, उसे लगा कि जैसे उसकी गुड़िया ने कुछ हरकत की। "तुम ग़लत कह रही हो," उसे लगा कि जैसे गुड़िया ने कहा हो , "तुम तो उनकी परवाह करती हो, है न?"

क्षण भर के लिए जेन चौंक गई। फिर वह हंसी। "गुड़ियें बात नहीं किया करतीं," उसने कहा। "मैं जानती हूँ कि तुम्हारी आवाज़ का सुनाई देना सिर्फ मेरी कल्पना ही है। लेकिन मार्जोरी, यह कल्पित व्यवहार मुझे अच्छा लग रहा है। हाँ, जब मैं बड़ी हो जाउंगी, मुझे उन बच्चों से दोस्ती करके बहुत अच्छा लगेगा।"

"तो जब तुम बड़ी हो रही हो, उन्हें सदा याद रखना," मार्जोरी ने कहा। "लेकिन जब तक तुम बड़ी होगी, वे बच्चे भी बड़े हो जायेंगे। फिर भी ऐसे बच्चे तो हमेशा ही होंगे जिन्हें तुम्हारे जैसे दोस्तों की ज़रूरत होगी।"

"मैं बिलकुल नहीं भूलूंगी," जेन ने कहा।

और वह सच में नहीं भूली। तब भी नहीं, जब उसके जीवन में रोमांचक बदलाव आ रहे थे। जब वह आठ साल की थी, उसके पिता ने दोबारा विवाह कर लिया, और उनकी नई पत्नी सीडरविल के सुन्दर और विशाल घर में आकर रहने लगी।

इस नई पत्नी के पहले से ही दो बेटे थे। हैरी १८ वर्ष का था, और वह जेन को अपने से बहुत बड़ा लगता था। लेकिन जॉर्ज जेन की ही उम्र का था। वह एक सीधा-सादा और मैत्रीपूर्ण स्वभाव का बालक था। उसे अपनी चीज़ें औरों के साथ बाँटना अच्छा लगता था।

"चलो जेन," वह कहता, "खेत में चल कर इल्लियां खोजते हैं।"

फिर वह अपना हरे पंख वाला टोप पहन कर अपनी खिलौना तलवार साथ ले लेता, कि रास्ते में कहीं कोई दुश्मन न मिल जायें। लेकिन उन्हें उस तलवार को इस्तेमाल करने की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि खेतों में रहने वाले सभी जीव-जंतु उनके दोस्त थे।

जेन जब भी जॉर्ज के साथ इस तरह खेतों में जाती, वह इतनी उत्साहित रहती थी, कि वह अपनी कमर का दर्द बिलकुल भूल जाती, और यह भी कि वह बहुत दुबली-पतली थी, और देखने में बिलकुल साधारण। वह जॉर्ज के साथ सब जगह घूमती फिरती, और वे इल्लियां, नन्हे मेंढक और तितलियाँ पकड़ते।

"मार्जोरी, मुझे बहुत मज़ा आ रहा है," घर लौट कर जेन अपनी गुड़िया से कहती। "जॉर्ज एक बहुत अच्छा दोस्त है।"

"हाँ, बिलकुल," मार्जोरी ने मुस्कुराते हुए कहा। "अच्छे दोस्त मिल जाएँ, इससे अच्छी बात भला क्या हो सकती है?"

शाम के समय जेन की नई माँ बच्चों के साथ घर के बड़े कमरे में बैठती। वह गिटार बजातीं, और सब बच्चे साथ में गाना गाते।

जब वे गाते-बजाते थक जाते, तो वह बच्चों को कहानियां पढ़ कर सुनाती। वह स्कूल के नाटक की तैयारी में उनकी मदद करती, और उनके दोस्तों के लिए दावतें करती।

एडम्स परिवार के बच्चों का समय बहुत अच्छा गुज़र रहा था।

लेकिन जेन के जीवन में केवल खेल-कूद ही सब कुछ नहीं था। उसे स्कूल की पढाई भी करनी होती थी। और कुछ शांत समय ऐसा भी होता था जब जेन मार्जोरी के साथ अपने पिता के पुस्तकालय में अकेले बैठ कर पुस्तकें पढ़ती।

"इतनी छोटी बच्ची इतनी बड़ी पुस्तक पढ़ रही है," एक दिन उसके पिता ने कहा। "लेकिन ठीक है, जेन। मुझे अच्छा लगता है तुम्हें पढ़ते देख कर। इतना अच्छा, कि हर किताब पढ़ने के लिए मैं तुम्हें पांच सेण्ट दूंगा।"

"वाह, यह तो बढ़िया सौदा है !" मार्जोरी ने फुसफुसा कर कहा। "तुम्हें तो वैसे ही पढ़ना पसंद है। तुम बहुत पैसा कमाओगी।"

जेन एक के बाद एक किताबें पढ़ती ही गई, और वाकई उसने काफी पैसे बना लिए। और खास बात यह थी कि न केवल उंसने पुस्तकालय की सारी किताबें पढ़ीं, बल्कि जो कुछ वह पढ़ती, उसे याद भी हो जाता। अपने पिता की पुस्तकों से उसने बहुत सी रोचक बातें सीखीं।

जेन अब बड़ी और लम्बी हो गई थी। अब वह उतनी दुबली भी नहीं थी, और वह बहुत तीव्र-बुद्धि थी। उसकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि उसने नॉर्थम्पटन मेसाचुसेट्स के स्मिथ कॉलेज की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करके वहां प्रवेश पा लिया।

"कितना सुखद है यह," जेन ने अपने पिता से कहा।

"वाकई, यह बहुत सुखद बात है," उन्होंने सहमति जताई। "मैं जानता हूँ कि बहुत कम लोग इतने बुद्धिमान होते हैं कि स्मिथ कॉलेज में दाखिला पा सकें। मुझे नाज़ है तुम पर। लेकिन जेन, मैं रॉकफोर्ड महिला कॉलेज का ट्रस्टी हूँ। तुम अगर वहां नहीं जाओगी तो लोग क्या सोचेंगे। शायद मुझे ट्रस्टी-पद से इस्तीफ़ा देना पड़े।"

जेन नहीं चाहती थी कि उसके पिता को शर्मिंदगी उठानी पड़े या उन्हें दुःख पहुंचे। इसलिए उसने स्मिथ कॉलेज में पढ़ने का अपना स्वप्न त्याग दिया। उसने अपना सामान बांधा, और रॉकफोर्ड कॉलेज चली गई।

"यह तो बिलकुल बुरा नहीं है," वहां पहुँच कर उसने कहा। वह अपने कमरे में मार्जोरी के साथ काल्पनिक बातें कर रही थी। बिलकुल वैसे ही, जैसे वह तब करती थी, जब वह बहुत छोटी थी। ऐसे करने से उसे बड़ा सुकून मिलता था, खासकर तब, जब वह किसी कठिन परिस्थिति में होती। "काश रॉकफ़ोर्ड से भी डिग्री मिल सकती," उसने कहा।
मार्जोरी ने कमरे का निरीक्षण किया। "यह तो काफी आरामदेह है," उसने कहा। "कालीन अच्छा है, और अंगीठी में जलाने के लिए लकड़ियां भी काफी हैं। और हो सकता है कि यहाँ की पढाई पूरी करने के बाद डिग्री हासिल करने का भी कोई रास्ता निकल ही आये।"

विद्यालय में जेन की बहुत सी सहपाठिनें थीं। जल्दी ही एक लड़की उसकी खास दोस्त बन गई। उसका नाम था एलेन गेट्स स्टार। एलेन और जेन एक दूसरे की हमराज़ बन गईं, और वे एक दूसरे से भविष्य के अपने सपनों को लेकर बातें किया करती थीं।

"बहुत सी लड़कियां विदेशों में जाकर धर्म-प्रचार करने की बातें करती हैं," जेन ने एलेन से कहा। "क्या कोई अपने देश के गरीबों के बारे में नहीं सोचता ?"

एलेन ने अपना सर हिलाया। "लगता है, गरीबों से कोई दोस्ती नहीं करना चाहता, है न ?"

जेन के चेहरे पर अचानक एक दृढ निश्चय का भाव आ गया। उसे फ्रीपोर्ट के बदहाल घरों और फटेहाल बच्चों की याद आ गई। "एक दिन आएगा, जब मैं यह सब बदल दूँगी," उसने कहा।

उसने बड़ी मेहनत से पढाई की। उसने गणित और विज्ञानं के विषय चुने, जिनसे बाकी लड़कियां घबराती थीं, और बहुत अच्छे अंक प्राप्त किये। जब उसने विद्यालय की तीन वर्ष की पढाई पूरी कर ली, तो उसे एक और वर्ष तक वहां रह कर उच्च-स्तरीय शिक्षा पाने की अनुमति मिल गई। फिर उसने परीक्षा दी और कॉलेज डिग्री पाने की वरीयता हासिल कर ली।

"तुमने कर दिखाया, जेन," मार्जोरी ने खुशी से चिल्ला कर कहा। "मुझे पता था कि तुम कोई न कोई रास्ता अवश्य खोज लोगी, अगर कोशिश करोगी तो!"

"अब मैं डॉक्टरी की पढाई कर सकती हूँ," जेन ने कहा। "लोगों की मदद करने का यह बहुत अच्छा रास्ता होगा।"

और उसने फ़िलेडैल्फ़िया के महिला चिकित्सा महाविद्यालय को एक पत्र लिखा। रॉकफ़र्ड के उसके उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर उसे दाखिला मिल गया। पतझड़ शुरू होते ही उसे वहां जाना था।

लेकिन फिर एक बड़ी दुखद घटना घट गई।

अगस्त में, जब जेन मेडिकल कॉलेज जाने की तैयारी कर ही रही थी, जॉन एडम्स का देहांत हो गया।

जेन बहुत रोई। "ओह, मार्जोरी, अब मैं क्या करूँगी ?" वह सुबकते हुए बोली। "मेरे प्यारे, जग से निराले पिताजी। वह मेरे सबसे अच्छे दोस्त थे। मुझे उनकी बहुत याद आ रही है।"

"मैं समझती हूँ," मार्जोरी ने कहा। "जब एक दोस्त दूर जाता है, तो वह दिल में एक बड़ा खालीपन छोड़ जाता है।"

मार्जोरी ने जेन को यह नहीं बताया कि आगे चल कर उसकी ज़िन्दगी में दूसरे दोस्त आएंगे, और धीरे-धीरे दिल का यह खालीपन फिर से भर जायेगा। जेन को यह बात अपने अनुभव से स्वयं ही जाननी थी।

सितम्बर का महीना आ पहुंचा, और जेन फ़िलेडैल्फ़िया के लिए रवाना हो गई। जल्दी ही वह अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई के काम में व्यस्त हो गई। उसके दिल में अभी भी एक गहरा खालीपन था, लेकिन उसके पास उस तरफ ध्यान देने का समय न था।

लेकिन फिर एक ऐसी मुश्किल आ खड़ी हुई, जिसकी तरफ उसे ध्यान देना ही पड़ा।

जेन की पीठ-दर्द की समस्या फिर से वापस आ गई थी। उसे इतना तेज़ दर्द होता कि उसका उठना-बैठना मुश्किल हो जाता। किसी-किसी दिन तो वह बिलकुल भी पढ़ाई नहीं कर पाती थी।

"जेन, ऐसे कैसे काम चलेगा," मार्जोरी ने उसे चेताया। "तुम्हें किसी की मदद लेनी होगी। तुम अपने भाई के पास क्यों नहीं जातीं ?"

उसके सौतेले भाई हैरी हैडेलमैन ने जेन की बहन ऐलिस से विवाह किया था। वह अब आयोवा में रहता था, जहाँ वह एक सफल डॉक्टर था।

"हाँ, मुझे लगता है, मुझे उसके पास जाना होगा," जेन ने कहा। "कुछ तो करना ही होगा। न मैं कुछ कर पा रही हूँ, और न सोच पा रही हूँ। अब यह और नहीं सहा जाता।"

"तुम्हें एक ऑपरेशन की ज़रूरत है," जेन का मुआयना करने के बाद हैरी ने कहा। मैं तुम्हारी तकलीफ़ ठीक कर सकता हूँ, लेकिन तुम्हें फिर से स्वस्थ होने में काफी समय लगेगा।"

जेन ने ऑपरेशन के लिए हामी भर दी। उसे लगा कि अगर उसे स्वस्थ होकर दूसरों की मदद करनी है, तो यही एक रास्ता है।

ऑपरेशन के छः महीने बाद भी जेन पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पाई थी। उसे अभी भी कमर में एक भारी बंधनी पहननी पड़ती थी।

"तुम यूरोप घूमने क्यों नहीं चली जातीं ?" हैरी ने सुझाव दिया। "यह तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छा अनुभव होगा, और तुम्हें पुनः स्वस्थ और शक्तिशाली होने के लिए समय मिल जायेगा। लेकिन तुम्हारा अकेले जाना ठीक नहीं होगा। माँ तुम्हारे साथ जा सकती हैं। क्या विचार है तुम्हारा ?"

थोड़ा सोचने के बाद जेन को लगा कि शायद ऐसा करना उसे बहुत पसंद आएगा। "हैरी केवल मेरा सौतेला भाई ही नहीं, वह मेरा बहुत अच्छा दोस्त भी है। और मेरी सौतेली माँ भी। कितनी भाग्यशाली हूँ मैं ऐसे लोगों को पाकर, जो मेरा इतना खयाल रखते हैं।"

अचानक जेन को उन निर्धन लोगों की याद आ गई, जिनकी परवाह करने वाला कोई न था। "एक दिन मैं उनके लिए ज़रूर कुछ करूँगी," उसने निश्चय किया।

यात्रा की तैयारी पूरी करके जेन और उसकी सौतेली माँ यूरोप जाने वाले जहाज़ में सवार हो गईं। "सर्विया" नाम के इस जहाज़ के ऊपरी तल पर बैठी जेन समुद्र की ताज़ी खुली हवा में सांस ले रही थी। प्रति क्षण उसे अपने शरीर में एक नई स्फूर्ति और प्रसन्नता का संचार होता महसूस हो रहा था।

उनका जहाज़ आयरलैंड के तट पर पंहुचा, और उन्होंने वहां का पर्यटन प्रारंभ कर दिया। उन्होंने "बार्नी स्टोन" का भ्रमण किया, वहां के अनूठे घर और विशाल किले देखे। फिर उन्होंने स्कॉटलैंड का भ्रमण किया, और फिर इंग्लैंड गए, और वहां की ख़ूबसूरत झीलें देखीं।

अंत में जेन और उसकी सौतेली माँ लंदन पहुंचे।

जानते हो, उन्होंने वहां क्या देखा ?

वहां उन्होंने देखीं विशाल इमारतें, खूबसूरत झरने, और हरे-भरे बगीचे। लेकिन उन्हें वहां तंग और बदहाल गलियां भी दिखाई दीं, जिनमें फटेहाल आदमी और भूखी सी नज़र आने वाली कमज़ोर औरतें रहती थीं। वहां चीथड़े पहने कुपोषित बच्चे घूमते नज़र आते। वहां उन्होंने एक बाजार भी देखा जहाँ बासी और सड़ी-गली सब्ज़ियां इन ग़रीब लोगों की बेची जा रही थीं।

जेन चूँकि अब बड़ी हो गई थी, वह अपनी गुड़िया को साथ लेकर नहीं चलती थी। लेकिन जब भी वह दुःखी या चिंतित होती, उसे मन ही मन मार्जोरी से बात करके बड़ा सुकून मिलता।

जिस दिन उसने उन सड़ी-गली सब्ज़ियों को बिकते देखा, उसने मार्जोरी से बात की। "कितना दुःखद था यह," उसने गुड़िया से कहा। "ये लोग अपने बचे-खुचे आखिरी दो चार सिक्कों से ये गोभियाँ खरीद रहे हैं, जो खाने लायक भी नहीं हैं। ओह, मार्जोरी, मुझे इन ग़रीब लोगों के कुछ करना ही होगा। मैं नहीं जानती क्या और कैसे, लेकिन मैं उन्हें इस हाल में नहीं छोड़ सकती।"

जेन लगभग दो वर्ष तक यूरोप में रही। वह बहुत से देशों में घूमी, और सभी जगह वह ऐसे लोगों से मिलीं जिन्हें मदद और दोस्ती की ज़रूरत थी।

वापस घर लौटने के बाद जेन ने अपनी मित्र एलेन स्टार को एक पत्र लिखा। "मैं बहुत असफल महसूस कर रही हूँ," उनसे एलेन को बताया। "बहुत सालों से मैं ज़रूरतमंद लोगों के बारे में सोचती रही हूँ, लेकिन उनके लिए कुछ भी कर नहीं पाई हूँ।”

लेकिन फिर जेन को एक जगह की याद आ गई, जिसे उसने लंदन में देखा था। वह जगह थी टॉयनबी हॉल, जो कि लंदन की झोपड़पट्टी के बीच बसी एक इमारत थी। बहुत से पढ़े-लिखे लोग सामूहिक रूप से वहां आकर गरीब लोगों के साथ अपना ज्ञान बांटते थे। उस स्थान को "सेटलमेंट हाउस" कहा जाता था, और बचपन में जेन ने जिस घर का सपना देखा था, यह बहुत कुछ वैसा ही था। मैले-कुचैले घरों के बीच स्थित यह एक सुन्दर जगह थी। एक ऐसी जगह, जहाँ गरीब लोग आकर आनंद के कुछ क्षण बिता सकें और नए दोस्त बना सकें।

"तुम वापस यूरोप क्यों नहीं चली जातीं ?" मार्जोरी ने फुसफुसा कर जेन से कहा। "शायद वहां तुम्हें और ऐसी जगहें देखने को मिलें, जिनसे यह समझने में आसानी हो कि गरीबों की मदद के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए।"

और फिर जेन वापस यूरोप चली गई, और इस बार एलेन भी उसके साथ गई।

जब वे दोनों वापस अमेरिका लौटीं, जेन ने अपना मन बना लिया था। वह झोपड़पट्टी के बीचोबीच एक विशाल और सुन्दर घर बनाएगी, आस-पड़ोस के सभी लोगों के वहां बुलाएगी, और अपना स्कूल में सीखा ज्ञान और यात्राओं का अनुभव उनके साथ बांटेगी।

"मैं यह घर शिकागो में बनाऊंगी," उसने कहा। "पता है, एलेन, यूरोप में झोपड़पट्टी में रहने वाले लोग कम से कम एक दूसरे के घर जाकर मिल सकते हैं। वे एक ही भाषा बोलते हैं। लेकिन यहाँ शिकागो में इटली, जर्मनी, पोलैंड, रूस और अन्य बहुत सी जगहों से से आये हुए लोग हैं। वे वाकई बहुत अकेला महसूस करते होंगे।

जेन और एलेन शिकागो में इस काम के लिए एक उचित घर की तलाश में निकल पड़ीं। "घर बहुत अच्छा होना चाहिए, और बड़ा भी," जेन ने कहा। "अगर वह गंदा या बदहाल हुआ तो कोई भी वहां नहीं आएगा।"

अब झोपड़पट्टी के बीच एक बड़े और सुन्दर घर की खोज कोई आसान काम तो है नहीं। जेन और एलेन खोजती रहीं, खोजती रहीं। शायद उन्होंने गन्दी बस्तियों की गलियों में सैकड़ों मीलों तक खोज की होगी, और हज़ारों पुराने और जर्जर घर देखे होंगे।

लेकिन फिर एक बहुत ही अद्भुत बात हुई।
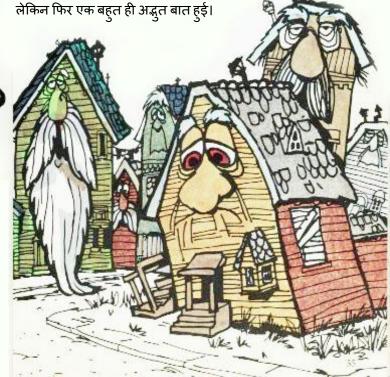
जेन एक आर्किटेक्ट एलन पौंड के साथ हाल्सटेड स्ट्रीट से होकर जा रही थी, कि उसकी नज़र ईंटों से बने एक बड़े घर पर पड़ी।

"देखो, यह रहा," उसने उत्साह से चिल्ला कर कहा। "मुझे ठीक ऐसी जगह की ही तलाश थी। अरे ठहरो, रुक जाओ।"

मिस्टर पौंड रुक गए और निहारने लगे। "वह घर ?" उन्होंने कहा। "यह तो बहुत पुराना हल परिवार का महल है। यह अच्छी हालत मैं नहीं है।

"लेकिन यह बहुत खूबसूरत है," जेन ने कहा। "हम इसे ठीक कर लेंगे। मुझे इस हल परिवार के बारे में बताओ। क्या वे मुझे यह घर किराये पर देंगे ?"

मिस्टर पौंड ने कंधे उचकाए। "कह नहीं सकते," उन्होंने कहा। "चार्ल्स हल एक बहुत धनवान व्यक्ति था, और उसने यह घर ३० साल से भी पहले बनाया था। उसकी मृत्यु के बाद यह घर उसकी चचेरी बहन मिस हेलेन कल्वर को मिल गया। अब यह उनकी संपत्ति है, लेकिन परिवार का कोई भी सदस्य बहुत समय से इस घर में नहीं रहा है।"

"मुझे मिस कल्वर के पास ले चलो," जेन ने कहा। "मैं उन्हें बताउंगी कि इस घर को लेकर मेरी क्या योजना है।"

मिस कल्वर बहुत खुश हुईं जब उन्हें पता चला कि जेन हल परिवार के उस पुराने घर में एक "सेटलमेंट हाउस" चलाना चाहती है।

" हाल्सटेड स्ट्रीट बहुत ख़ूबसूरत हुआ करती थी, जब मेरे भाई चार्ल्स ने वह घर बनाया था," उन्होंने कहा। "अब वह जगह खूबसूरत नहीं रही। लेकिन जो लोग अब वहां रहते हैं, वे शायद बहुत अच्छे लोग हैं। उन्हें सिर्फ अपनी ज़िन्दगी में थोड़ी खूबसूरती और प्रसन्नता चाहिए।"

"तो क्या आप मुझे वह घर किराये पर देंगी?" जेन ने पूछा।

"मैं ज़रूर दूँगी," मिस कल्वर ने जवाब दिया। "और मैं तुमसे साल भर का किराया पूरा एक डॉलर लूंगी।" उन्होंने मुस्कुरा कर कहा। " मेरा भाई बहुत भाग्यशाली था, और उसकी हमेशा से यह इच्छा थी कि वह अपनी संपत्ति का कुछ पैसा शिकागो नगर को वापस दे सके। शायद मेरे लिए यह एक मौका है, कि मैं उसकी यह इच्छा पूरी कर सकूँ।"

और जेन और एलेन ने ख़ुशी-ख़ुशी किराये का एक रूपया अदा कर दिया, और फिर वे उस पुराने घर की सफाई और रंगाई-पुताई के काम में जुट गईं। जल्दी ही जेन के अन्य दोस्तों को उसके इस काम के बारे में पता चला, और वे भी मदद करने आ पहुंचे।

"इस जगह का नाम क्या रखोगी ?" एक ने पूछा।

"इसका नाम तो पहले ही है," जेन ने कहा। "इसे हल हाउस कहते हैं।"

आस-पड़ोस के लोग इन सजी-धजी महिलाओं को घूर-घूर कर देखते, जब वे वहां आकर उस पुराने महल की खिड़कियां साफ़ करतीं, फर्श रगड़तीं, और दरवाज़ों पर रंग-रोगन करतीं।

"यहाँ हो क्या रहा है?" वे कहते। "ये महिलाऐं इस बस्ती में तो हरगिज़ नहीं रहने वाली!"
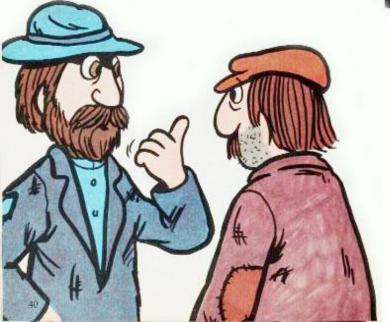
"लेकिन फिर, जब वह घर रंग-पुत कर चमकने लगा, तो वहां बहुत सा फर्नीचर लाया गया। सीडरविल के जेन के अपने घर से कुर्सियां, मेज़ें, और सोफे लाये गए। जेन ने यूरोप के जिन शहरों और गांवों का भ्रमण किया था, वहां की ख़ूबसूरत तस्वीरें भी थीं। चांदी की अलमारियां, चीनी-मिटटी केसुन्दर बर्तन, और बिस्तरों के लिए खूबसूरत चादरें।

"कितनी खूबसूरत चीज़ें हैं !" पड़ोसियों ने कहा। "लगता है, ये महिलाएं वाकई यहाँ आकर बसने वाली हैं।"

और जेन और एलेन ने बिलकुल वही किया। वे बोरिया-बिस्तरा समेत उस घर में आकर रहने लगीं। रात में वे बरामदे में दिये जला देतीं। दिन के समय वे आस-पड़ोस के इलाके में टहलतीं-घूमतीं।

जेन उसी सड़क की एक छोटी सी दूकान से अपना किराने का सामान खरीदती थी, और उसने दुकानदार से कहा कि यदि कोई भी उसके घर आना चाहता है, तो वह उनका स्वागत करेगी।

किराना दुकान तक आते-जाते वह वहां के बच्चों से बातचीत करती। वह उनसे पूछती कि क्या वे उसके घर आकर खेलना चाहेंगे।

बच्चे शिष्टाचार से पेश आते, लेकिन उनके मन में संशय था।

"कोई ऐसी महिला हाल्सटेड स्ट्रीट पर आकर भला क्यों रहेगी ?" एक ने पूछा।

"मेरी मानो तो कुछ तो गड़बड़ है," दूसरे ने कहा।

"ओह, एलेन, उन्हें हम पर भरोसा नहीं है," एक दिन घर पहुंच कर जेन ने कहा।

"इसमें थोड़ा समय लगेगा," एलेन बोली। "वे हम जैसे लोगों से न्यौता पाने के आदी नहीं हैं। उन्हें विश्वास नहीं कि हम केवल उनसे मित्रता करना चाहते हैं।"

एलेन ने अपनी बात अभी पूरी भी नहीं की थी, कि दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़ आई।

जेन दौड़ कर देखने गई, कि कौन आया है।

काले बालों वाली एक नौजवान महिला दरवाज़े पर खड़ी थी। उसकी गोद में एक छोटा बच्चा था, और एक नन्ही लड़की उसकी स्कर्ट का कोना पकडे खड़ी थी।

"किराना दुकान मालिक ने कहा था कि शायद आप मेरी मदद कर सकती हैं," उसने कहा। वह धीमे और मृदु स्वर में बोल रही थी, और उसका उच्चारण बिलकुल अलग था। जेन तुरंत समझ गई कि वह इटली से थी।

"मैं नौकरी करती हूँ," उस महिला ने कहा। "यदि मैं किसी दिन काम पर न जा सकूँ तो मेरी नौकरी चली जाएगी। मेरी दोस्त, जो मेरे पीछे बच्चों की देख-रेख करती है, आज बीमार है। और कोई दूसरी जगह नहीं है, जहाँ मैं अपने दोनों बच्चों को छोड़ सकूँ।"

"बिलकुल जगह है," जेन ने कहा। "तुम उन्हें हमारे पास छोड़ सकती हो। हमें ख़ुशी होगी उनकी देख-रेख करने में। आख़िरकार, हम पडोसी हैं, है न ?"

जेन ने छोटे बच्चे को गोदी में ले लिया, और एलेन उस लड़की को अपने साथ बरामदे में ले गई।

"अब तुम आराम से काम पर जाओ, और बिलकुल चिंता मत करो," जेन ने कहा।

और फिर जेन अपने-आप से बोली, "शायद यही शुरुआत है।"

यह वाकई एक शुरुआत थी। जल्दी ही पांच छोटे बच्चे रोज़ाना सुबह हल हाउस में आने लगे। दो इतालियन बच्चे थे, और उनके आलावा तीन और।

जेन अब व्यस्त हो गई थी। अब उसके पास पहले की तरह मार्जोरी से बातें करने का समय नहीं रहता था। लेकिन मार्जोरी को इसके परवाह नहीं थी। जेन को आख़िरकार खुश देख कर वह भी प्रसन्न थी।

एलेन भी खुश थी। जब जेनी डाओ नाम की एक नौजवान महिला उससे मिलने आई, तो बड़े गर्व साथ उसने उसकी मुलाकात अपने पांच नन्हे दोस्तों से कराई।

"ये सब मुझे दिन भर दौड़ते रहते हैं, इन्हें संभालना आसान नहीं है," एलेन ने बताया।

"हाँ, यह तो मैं देख ही रही हूँ," जेनी हंस कर बोली। "तुम चाहो तो मैं यहाँ आकर इनकी देख-रेख में तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।"

जेन और एलेन को लगा कि भला इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। जेनी भी वहां आने लगी, और इस तरह शुरुआत हुई, हल हाउस किंडरगार्टन की।

जल्दी ही कुछ और दोस्त भी शामिल हो गए, और हल हाउस में कई नए कार्यक्रम शुरू हो गए। जैसे बड़ी लड़कियों के लिए सिलाई, नृत्य और खाना पकाने की कक्षाएं। बड़े लड़कों के लिए खेल-कूद के कार्यक्रम शुरू हुए, जिससे कि वह सड़कों पर आवारागर्दी करके किसी मुसीबत में न फंसें। और सभी के लिए गायन और नाट्य के कार्यक्रम भी होते थे।

हल हाउस ठीक वैसा ही बनता जा रहा था, जैसा कि जेन का सपना था। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ लोग आकर एक दूसरे से मिलते, नई बातें सीखते, आनंदित होते, और तरोताज़ा महसूस करते।

जब यह बात फैली कि हल हाउस की महिलाएं बड़े मैत्रीपूर्ण स्वभाव की हैं, तो शाम के समय वयस्क लोग भी वहां आने लगे। वे वहां आकर कॉफ़ी पीते और केक खाते। इन वयस्क लोगों के मिलने जुलने लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था कर दी गई। इस कमरे को जेन की इटली से लाई हुई तस्वीरों से सजाया गया था। इटली से आये हुए जेन के पडोसी इन तस्वीरों को देख कर अपने घर की याद में खो जाते, और थोड़ा खिन्न हो जाते, लेकिन फिर भी उन्हें ये तस्वीरें बहुत सुखद लगती थीं।

जल्दी ही हल हाउस लोगों से भरा-पूरा रहने लगा। दिन के समय बच्चे वहां आते। वयस्क लोग शाम के समय आते। सब हँसते और आपस में बातें करते। लोग एक दूसरे को जान रहे थे, और नई जानकारियां हासिल कर रहे थे।

"तुमने इन सब के लिए कितना कुछ किया है, जेन," मार्जोरी ने कहा।

"इन्होंने भी तो मेरे लिए कुछ कम नहीं किया है," जेन ने उत्तर दिया। "उन्होंने मुझे स्वीकार किया है। अब मैं सही मायनों में उनकी पडोसी हूँ। और मेरे लिए यह बहुत मायने रखता है।"

जैसे-जैसे हल हाउस की ख्याति बढ़ी, धनवान इलाकों से लोग आकर वहां के काम में सहायता करने लगे। प्रतिभाशाली लोग वहां आकर अपना हुनर उन लोगों के साथ बांटते, जो इतने भाग्यशाली नहीं थे।

दिसंबर के महीने में, जब क्रिसमस का समय आया, और हल हाउस के चारों ओर ठिठुरती हवाएं चल रहीं थी, लोग क्रिसमस की अनेक सौगातें हल हाउस को भेजने लगे।

"हमारी क्रिसमस बहुत शानदार होने वाली है," जेन ने ख़ुश होकर कहा। "देखो ये टर्की और आलू , और ढेर के ढेर सेब। मिठाई के डब्बों की तो भरमार है। मज़ा आ जायेगा सब बच्चों को।"

"हाँ, बिलकुल मज़ा आएगा," एलेन ने कहा। "लेकिन, ... , लेकिन बच्चे हैं कहां, जेन ? कुछ दिनों से वे दोपहर को आ ही नहीं रहे। कहीं ऐसा तो नहीं कि वे इस सब खेल-कूद और कार्यक्रमों से ऊब गए हों।

"काश, यह सच न हो," जेन ने कहा। फिर वह जल्दी से पड़ोस की ओर चल दी, पता करने कि मामला क्या है।

जल्दी ही उसे पता चला कि क्रिसमस के समय जब छुट्टियां होती हैं, बहुत से बच्चे नज़दीक के कारखानों में काम करने के लिए चले जाते हैं। इसीलिए वे हल हाउस को नहीं आ पाते थे। उनके पास समय ही नहीं था।

"यह तो बहुत दुःख की बात है," जेन ने कहा। "काम करने के लिए वे अभी बहुत छोटे हैं। लेकिन शायद उनके माता-पिता को पैसे की सख्त ज़रूरत है।"
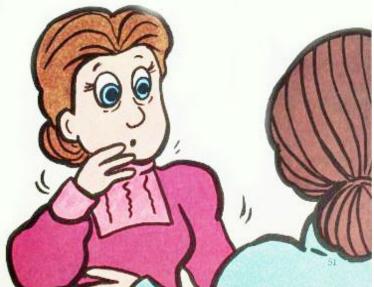
क्रिसमस से दो दिन पहले लड़कियों के लिए एक पार्टी रखी गई। वे सभी आईं। जेन को लगा कि जैसे वे सभी बहुत थकी हुई थीं, लेकिन फिर भी उन्हें देख कर वह बहुत खुश हुई। उन्होंने क्रिसमस के गीत गाये, और एक दूसरे को सौगातें दीं। और फिर भोजन का समय हो गया।

जेन ने बड़ी लगन से पूरी तैयारी की थी। सैंडविच और बिस्कुट थे, गर्म चॉकलेट का भी इंतेज़ाम था। और मिठाइयां तो भरपूर थीं। आखिर लोगों ने मिठाई के ढेरों बक्से हल हाउस भेजे थे।

लेकिन जेनी डाओ और जेन को बड़ी हैरानी हो रही थी। लड़कियां मिठाइयों को छू तक नहीं रही थीं। बिस्कुट और गर्म चॉकलेट में भी उनकी कोई रूचि दिखाई नहीं पड़ रही थी।

फिर जाकर जेन, एलेन और जेनी को पता चला कि आखिर माज़रा क्या था।

सभी लड़कियां नज़दीक के एक मिठाई कारखाने में काम करती रही थीं। हफ्ते में छः दिन, और रोज़ाना चौदह घंटे, उन्हें खचाखच भरे एक तंग कमरे में मिठाइयां डब्बों में भरने का काम करना होता था। वे ऊब गई थीं मिठाइयां देख देख कर, और उसकी महक सूंघ सूंघ कर।

"शायद अब वे सारी ज़िन्दगी मिठाइयों में कोई रूचि नहीं दिखाएंगी," मार्जोरी ने जेन से कहा।

"मैं अगर उनकी जगह होती, तो शायद मेरा भी यही हाल होता," जेन ने कहा। "बताओ भला, हफ्ते में छः दिन, चौदह-चौदह घंटे ! यह बिलकुल असहनीय है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे मिठाई के डब्बे भर रही हों, या कपड़ा बना रही हों। जो कुछ भी कर रही हों। इतनी छोटी उम्र में इतनी कड़ी मेहनत से उनकी सेहत बर्बाद हो सकती है।"
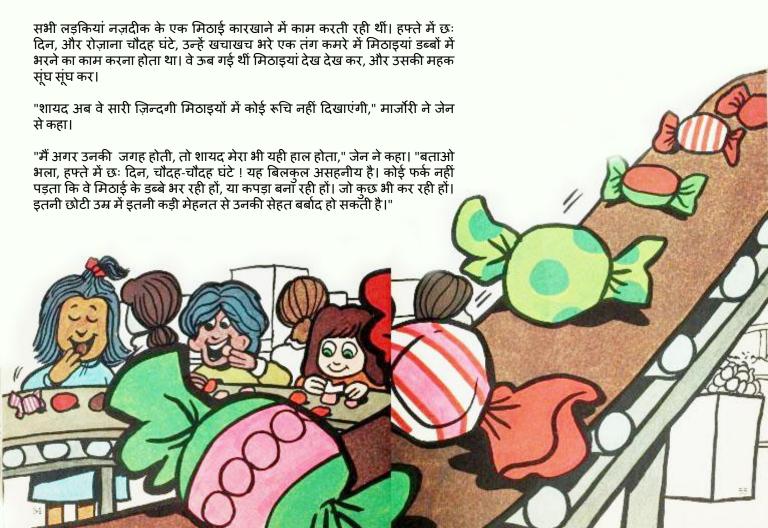
जेन और उसके मित्रों ने इस बारे में समाचार पत्रों को और राज्य के विधायकों को पत्र लिखने शुरू किये।

"इस प्रकार की गतिविधियों के विरुद्ध क़ानून बनने चाहिए," जेन ने कहा। "बच्चों का संरक्षण आवश्यक है।"

"फैक्ट्री के मालिकों को यह बात अच्छी नहीं लगेगी," मार्जोरी ने चेताया। "वे तुमसे झगड़ा करेंगे। तुम्हें तो पता है, कि उन्हें वयस्कों की अपेक्षा बच्चों को बहुत कम पैसे देने पड़ते हैं।"

फैक्ट्री के मालिकों को वाकई अच्छा नहीं लगा, और उन्होंने झगड़ा भी किया। लेकिन कुछ ही समय बाद बाल-श्रम कानून पास हो गया, और यह हो पाया हल हाउस के निवासियों के प्रयत्नों के कारण। इस कानून के अनुसार १४ वर्ष से छोटे बच्चों को काम करने की अनुमति नहीं थी, और १६ वर्ष से छोटे बच्चे एक दिन में अधिकतम ८ घंटे काम कर सकते थे।

जेन को इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई कि वह कुछ हासिल कर पाई थी, विशेषकर बाल-श्रम कानून जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धि।

"अब जबकि यह काम पूरा हो गया है, मुझे सड़कों पर पड़े कूड़े के बारे में कुछ करना चाहिए," जेन ने कहा। "इससे दुर्गन्ध भी आती है, और यह स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। कूड़ा उठाने वाले अपना काम बिलकुल ठीक से नहीं कर रहे हैं।"

शायद उस समय की कोई भी महिलाएं कूड़े से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती होंगी, लेकिन जेन आगे बढ़ी, और उसने अपने इलाके की कूड़ा निरीक्षक की नौकरी हासिल कर ली।

रोज़ाना सुबह जेन जल्दी उठ जाती और घर से निकल पड़ती। वह एक सड़क से दूसरी सड़क कूड़ा इकट्ठा करने वाली गाड़ियों के पीछे जाती। कूड़ा कर्मचारी किस प्रकार कूड़ा उठा रहे है, वह इस पर पूरी नज़र रखती।

"अरे, तुम," उसने एक आदमी से चिल्ला कर कहा. "तुम्हारी गाड़ी पूरी भर गई है। कूड़ा-घर पहुँचने से पहले इस पर से ज़रूर कूड़ा सड़क पर गिरेगा।"

"एक महिला को कूड़ा-निरीक्षक नहीं होना चाहिए," उस आदमी ने बड़बड़ा कर कहा।

जेन ने उसके बड़बड़ाने पर कोई ध्यान नहीं दिया, और वह अड़ गई कि नगरपालिका को और अधिक कूड़ा गाड़ियां भेजनी चाहिए। जल्दी ही झोपड़पट्टी की हालत सुधरने लगी। सड़कें अब अधिक साफ़-सुथरी रहती थीं, और दुर्गन्ध भी बहुत कम आती थी।
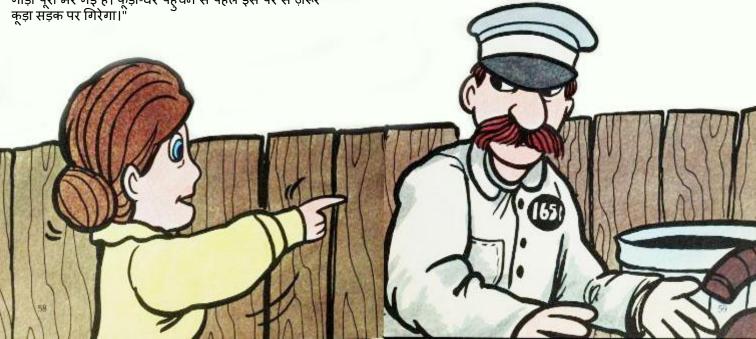
इसके बादजेन ने संघर्ष करना हमेशा जारी रखा। उसने सारी ज़िन्दगी गरीबों के लिए काम किया, जिन्हें उसने अपना दोस्त बना लिया था।

जेन के ही प्रयासों से ही शिकागो में सबसे पहला खेल का मैदान बनाया गया। जेन के कारण ही शहर में और अधिक स्कूल खोले गए। महिलाओं को वोट का अधिकार दिलाने में भी उसका आंशिक योगदान रहा।

अपने समय के हिसाब से जेन के विचार बहुत प्रगतिशील थे। उसने कोशिश की कि शहर के बच्चों के लिए गांवों में कैंप लगाए जाएँ, ताकि वे छुट्टियों का समय खुले खेतों और जंगलों में बिता सकें।

समय के साथ जेन बहुत प्रसिद्ध हो गई। दूसरे शहरों में भी लोग उसके विचारों का अनुसरण करने लगे, और गरीब बस्तियों में हल हाउस जैसे घर स्थापित करने लगे। विधायक, प्रधान मंत्री, और राजकुमार इत्यादि बड़े-बड़े लोग हल हाउस को देखने और जेन से बात करने के लिए आने लगे। एक बार तो अमेरिका के राष्ट्रपति भी आये।

इसमें कोई शक नहीं कि जेन को यह प्रसिद्धि, प्रशंसा और सम्मान अच्छा लग रहा था, लेकिन उसे असली ख़ुशी इस बात से नहीं मिलती थी। उसे सच्ची ख़ुशी इस बात से मिलती थी कि वह आसपास के लोगों के लिए एक सच्ची दोस्त साबित हुई थी, और उन्होंने भी उसकी दोस्ती को अपनाया था।
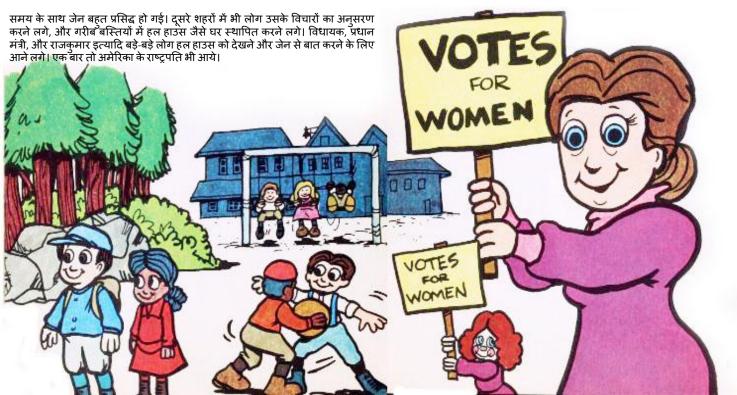
शायद तुम्हारे शहर में हल हाउस जैसी जगह की आवश्यकता नहीं होगी। तुम शायद अपने राज्य के कानूनों में कोई बदलाव भी न चाहते हो। लेकिन शायद तुम दोस्ती के बारे में ज़रूर सोचना चाहोगे। अगर ऐसा है, तो तुम यह महसूस करोगे कि दोस्तों के बिना हम अकेले हैं। अगर हमारे आस-पास दोस्त हों, तो हम बहुत कुछ कर सकते हैं। हम नए विचार सीख पाते हैं। हमारे पास जो कुछ है, उसे बाँट पाते है, और ऐसा करने से हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है।

तुम्हें ज़रूर महसूस होगा कि दोस्ती का वितरण करना कितना महत्वपूर्ण है, और दूसरों की दोस्ती को स्वीकार करना भी।

ठीक वैसे ही, जैसे हमारी दोस्त जेन एडम्स ने किया।

ऐतिहासिक तथ्य

जेन एडम्स
(1860 – 1935)

जेन एडम्स का जन्म ६ सितम्बर १८६० में इलिनॉय के सीडरविल में हुआ था। वह एक धनवान मिल मालिक जॉन एडम्स के पांच बच्चों में सबसे छोटी थी। जॉन एडम्स अपने राज्य का विधायक था, और एक बैंक भी चलाता था।

जेन जब बहुत छोटी थी, तभी उसकी माँ का देहांत हो गया था। अतः इस संवेदनशील बच्ची की देख-रेख उसके बड़े भाई-बहनों ने ही की थी। उसकी रीढ़ की हड्डी टेढ़ी होने के कारण उसका सर एक ओर को झुका रहता था, और इस कारण उसे बड़ी मानसिक वेदना सहनी पड़ी। उसे लगता था कि इस शारीरिक विकृति के कारण वह बहुत बदसूरत लगती है।

जेन केवल ७ वर्ष की थी, जब उसे आस-पास के लोगों की गरीबी का अहसास हुआ। सीडरविल के करीब एक शहर में एक बदहाल सड़क पर उसने चीथड़े पहने बच्चों और छोटे-छोटे अस्वच्छ घरों को देखा। उसने तभी अपना यह निश्चय उजागर कर दिया कि वह ऐसी बस्ती के बीच एक विशाल घर बनाएगी जहाँ गरीब बच्चे आकर खेल सकें।

जब जेन आठ वर्ष की थी, उसके पिता ने एना हैडलमैन नाम की एक विधवा महिला से विवाह कर लिया। उनके दो बेटे थे, १८ वर्ष का हैरी, और जॉर्ज, जो जेन से केवल ६ महीने छोटा था। जॉर्ज बड़ा उत्साही और साहसी लड़का था, और उसने जेन की अपने संकोची स्वाभाव से बाहर आकर जीवन के दायरे बड़े करने में बहुत मदद की।

१८८१ में जेन ने रॉकफोर्ड इलिनॉय में स्थित रॉकलैंड महिला विद्यालय से पढाई पूरी की। इस विद्यालय से निकलने वाली अधिकांश छात्राओं को केवल एक प्रमाण-पत्र दिया जाता था। लेकिन जेन ने वहां एक वर्ष अधिक पढाई की और उच्च श्रेणी का पाठ्यक्रम पूरा करके पूर्ण डिग्री प्राप्त की। फिर शीघ्र ही वह डॉक्टरी की पढाई करने फ़िलेडैल्फ़िया महिला कॉलेज चली गई।

लेकिन तुरंत ही जेन को डॉक्टर बनने की अपनी आकांक्षा छोड़ देनी पड़ी। फ़िलेडैल्फ़िया में पहले ही वर्ष में उसकी रीढ़ की हड्डी का दर्द इतना बढ़ गया कि उसे ऑपरेशन करवाना पड़ा। ऑपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ के दौरान उसने यूरोप की यात्रा की। वहां उसने झोपड़पट्टियों में रहने वाले गरीब लोगों की दुर्दशा देखी, और उसके मन में उनके लिए गहरी संवेदना जागी।

फिर वह अपनी रॉकफोर्ड की दोस्त एलेन स्टार के साथ एक बार फिर यूरोप के दौरे पर गई। इस बार उसने लन्दन का टॉयनबी हॉल नामक "सेटलमेंट हाउस" देखा, जहाँ शिक्षित लोग आकर गरीबों के पडोसी बन कर रहते, और उनकी सहायता करते। वह इस प्रयोग से बहुत प्रभावित हुई। फिर वे दोनों अमेरिका लौट आईं।

वापस आकर उन्होंने शिकागो की झोपड़पट्टियों में एक उपयुक्त स्थान की खोज की, और फिर उनकी निगाह ३३४ साउथ हाल्सटेड स्ट्रीट पर बदहाली की हालत में खड़े हल मेन्शन पर पड़ी। उन्होंने निश्चय किया कि सेटलमेंट हाउस के लिए यह स्थान सबसे उपयुक्त रहेगा, और उस घर को किराये पर ले लिया। उन्होंने घर की साफ-सफाई करके उसे फर्नीचर से सजाया, और वहां आकर उस इलाके के लोगों की पड़ोसी बन कर रहने लगीं।

जल्दी ही जेन और एलेन वहां की काम करने वाली महिलाओं के बच्चों की देखरेख हल हाउस में करने लगीं। फिर संभ्रांत परिवारों की कुछ और महिलाएं आकर वहां बच्चों को सिलाई और खाना बनाना सिखाने लगीं। बड़े लड़के-लड़कियां आकर वहां कई तरह के क्लब चलाने लगे, और वयस्क लोग वहां पार्टियों में शामिल होने के लिए आते।

जेन को जल्दी ही पता चला कि बस्ती की और भी ज़रूरतें थीं, जिन्हें सेटलमेंट हाउस पूरा नहीं कर सकता था। कुछ कारखानों में छोटे बच्चों से काम कराया जा रहा था। इसलिए जेन ने बाल श्रम कानून के लिए संघर्ष किया। कुछ लोग कारखानों में काम करते समय चोट खा कर घायल हो जाते थे। इसलिए जेन ने सरकार से मज़दूरों की सुरक्षा के लिए कानून बनाने को कहा। उसने प्रौढ़-शिक्षा, बच्चों के लिए नर्सरी, अच्छी आवास योजना, और महिलाओं के लिए वोट का अधिकार, इत्यादि अनेक अभियान छेड़े। उसका प्रभाव और ख्याति बढ़ती ही गई। वह पहली ऐसी महिला बनी जिसको येल विश्वविद्यालय ने मानद डिग्री प्रदान की। राष्ट्रपति थिओडोर रूज़वेल्ट ने उसे "अमेरिका की सबसे सदुपयोगी नागरिक" कह कर बुलाया।

१९३१ में जेन को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चार वर्ष बाद २१ मई, १९३५ को उसका देहांत हो गया। वह लगभग ७५ वर्ष की थी, और अभी भी हल हाउस में ही रहती थी, और हॉल्स्टेड स्ट्रीट के अपने मित्रों की पडोसी थी।

समाप्त